अनुभव सुनाने वाले भी कई प्रकार के हैं। कोई को पूरा निश्चय है। कोई को सेमी निश्चय है। कोई को तो सेमी से भी कम है। भल सम्मुख बैठे हैं तो भी नम्बरवार ही समझते हैं। भगवान पढ़ाते हैं वो भी पूरा निश्चय नहीं है। स्कूल में टीचर कहेंगे क्या कि इनको निश्चय नहीं है? लेकिन यहाँ बाबा कहते हैं कि बहुत हैं जिनको निश्चय नहीं है। आधा घण्टा के बाद यही भूल जाते हैं कि बेहद का बाप टीचर, सद्गुरु हमको पढ़ाने वाला है। पूरा निश्चय नहीं है। नहीं तो वो नशा क्यों नहीं चढ़ा रहना चाहिए। गीता में है कि भगवानुवाच्य मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। सिर्फ कृष्ण का नाम डाल दिया है जिस कारण ही 100% गीता झूठी हो गई है। वो है कृष्ण भगवानुवाच्य। यह है शिवभगवानुवाच्य। एक ही बार की पढ़ाई से सद्गति को पाते हैं। यह प्वाइंट भी सिर्फ बुद्धि में बैठ जावे कि हमको ऊँच ते ऊँच भगवान पढ़ाते हैं तो भी कितना नशा चढ़ा रहे। कृष्ण को ऊँच नहीं कहेंगे। तुम बच्चों को बाबा ने अच्छी तरह से समझाया है कि ऊँच ते ऊँच शिवबाबा है। शिव के ही मंदिर जहाँ–तहाँ है। भक्त लोग शिव की पूजा करते हैं। कृष्ण को भगवान नहीं कहा जा सकता। भगवान एक ही है। वो ही राजयोग सिखाते हैं। जिनको यह निश्चय है उनको अंदर में अपार खुशी रहेगी। यह निश्चय हटना नहीं चाहिए। शिव के मंदिर में जाकर समझा सकते हो कि जिनकी पूजा करते हो वो हमको पढ़ा रहे हैं। यही तो ..... सागर, पतित–पावन है। 5000 वर्ष पहले भी इसने पढ़ाया था। बाप ने ब्रह्मा द्वारा रचा है तो ज़रूर ब्र.कु.कु. भाई–बहन हो गए। तुम्हारी स्टुडेण्ट लाइफ है ना। जब तक विनाश हो पिछाड़ी तक पढ़ना है। हम हैं ब्र.कु.कु.। यह है युक्ति कि देह–अभिमान छूट जावे। विकार की दृष्टि जा नहीं सकती। हम सब आत्माएँ भाई–2 हैं। वो हम सबका बाप है। नाम भी है अमरनाथ। मृत्युलोक से अमरलोक में ले जाने वाला। बाप कहते हैं कि तुम कहीं भी जा सर्विस कर सकते हो। मंदिर तो जहाँ–तहाँ होते ही हैं। बोलो कि हम दर्शन करने आए हैं। फिर बैठ समझाओ कि तु..... मालूम पड़ता है कि बाप ज्ञान का सागर है, पतित–पावन है। तो ज़रूर पतित से पावन बनाने लिए पढ़ाते होंगे। कृष्ण नहीं पढ़ाते हैं। शिवबाबा पढ़ाते हैं, राजयोग सिखाते हैं। तो ज़रूर उनको शरीर चाहिए। तो कहते हैं कि ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं। ब्र.कु.कु. को ही पढ़ाते हैं। भगवान स्वर्ग की रचना रचते हैं। इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर आकर पढ़ाते हैं। अगर यह भी निश्चय हो जावे तो भी खुशी रहे। गायन है ना अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो; परन्तु वो सच्ची पहचान बहुत (थोड़ों) में है। सामने भी आते हैं, अनुभव भी सुनाते हैं, बाहर जाते हैं तो कब पत्र भी नहीं लिखते हैं। फिर बाबा समझते हैं कि मर गया होगा। सचमुच मर भी जाते हैं। अहो, माया। बाप कहते हैं कि तुम कितनी दुस्तर हो। हमारे बच्चों को मार डालती हो। कितने मर जाते हैं। सेन्टर पर ही नहीं आते हैं। कोई बात से रूठ पड़ते हैं। एक–दूसरे से नहीं बनती है तो आना ही छोड़ देते हैं। तो मान की मर गया। तो बाप को लिखो कि हम बाप के बने थे, अभी मरता हूँ। बाबा भी लिख सकते हैं कि तुम बाप के बने थे, अब मर गए हो। ऐसे बहुत हैं। यहाँ आते ही हो बेहद के बाप के पास। फिर मा..... कितना मार डालती है। इसलिए बाबा कहते हैं कि ऐसे मच्छरों की तरह मरो नहीं। तुम बच्चों को तो ..... खुशी होनी चाहिए। सारी दुनिया जिनको याद करती है वो हमको पढ़ा रहे हैं। यह पद प्राप्त कराते हैं। आज पढ़ते हैं तो कल मर पड़ते हैं। तो बाबा कहेंगे ना कि यह मर पड़े हैं। मच्छर रात ढेर के ढेर निकलते हैं, सुबह में देखो तो मरे पड़े होते हैं। बाप उनसे ही भेंट करते हैं कि आज बेह(द) के बाप का बनते हैं फिर कल मर पड़ते हैं। ऐसे तो नहीं होना चाहिए ना। बाप कहते हैं कि कमबख्त ते कमबख्त देखना हो तो यहाँ देखो। जो बाप से पढ़कर फिर माया हाथ छुड़ा लेती है। कमबख्त के कमबख्त ही बन जाते हैं। अच्छा, सुबख्त बाप का बने रहने वाले बच्चों को नमस्ते। ओम